Dr. Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A II Sem.
CC-07 : Gandhian Philosophy

"Truth and God."

गाँधी जी का संपूर्ण विचार-धारा सत्य और ईश्वर से प्रभावित है। महात्मा गाँधी का जन्म आस्तिक परिवार में हुआ था जिसके फलस्वरूप उनके मन में ईश्वर के प्रति आस्था का प्रादुर्भाव हुआ। वेद, उपनिषद तथा गीता के सिद्धान्तों का उनके जीवन पर आध्यात्मिक प्रभाव पड़ा। महात्मा गाँधी जी ऐसे ईश्वर पर विचार करते हैं जो सम्पूर्ण विश्व का एकमात्र रचयिता, शासक और निर्देशक है। गाँधी जी ऐसे ईश्वर में विश्वास नहीं करते जो हमारी पहुँच से बाहर हो, बल्कि वह एक ऐसे ईश्वर में विश्वास करते हैं जो मानव के बिल्कुल करीब है। उन्होंने अपनी पुस्तक Young India में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि "चूँकि मैं अपने अंदर ईश्वरीय अस्तित्व को नहीं अनुभव करता हूँ तो हमें अपने जीवन में नित्य ही अनेक प्रकार के कष्टों का अनुभव करना पड़ता है।"

गाँधी जी का ईश्वरीय विचार एकात्मवादी नहीं जैसा कि हम शंकराचार्य के दर्शन में पाते हैं। शंकर का ईश्वर व्यक्तित्वहीन है। पर गाँधी जी का व्यक्तित्वपूर्ण है। शंकर ने परमात्मा को ब्रह्म की संज्ञा दी है जो व्यक्तित्वहीन है एवं जिसमें हम किसी गुण का आरोपण नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में वे एक निराकार ईश्वर में विश्वास करते थे, लेकिन इससे भिन्न महात्मा गाँधी व्यक्तित्वहीन, निराकार, चैतन्य तथा विश्वातीत ईश्वर को ही न मानकर एक ऐसे ईश्वर को मानते हैं जो पूर्ण, दयालु, न्यायप्रिय है एवं व्यक्तित्व पूर्ण है।

वस्तुतः गाँधी जी ने दर्शन की शिक्षा कहीं नहीं पाई थी और इसलिए उन्होंने अपने ईश्वर विचार को किसी भी दार्शनिक पृष्ठभूमि में व्यक्त करने का प्रयास नहीं किया है। गाँधी जी का दर्शन शंकर के दर्शन से भिन्न है। गाँधी जी ने

SEPTEMBER 2013

WK	M	T	W	T	F	S	S
35							1
36	2	3	4	5	6	7	8
37	9	10	11	12	13	14	15
38	16	17	18	19	20	21	22
39	23	24	25	26	27	28	29
40	30						

OCTOBER 2013

WK	M	T	W	T	F	S	S
40		1	2	3	4	5	6
41	7	8	9	10	11	12	13
42	14	15	16	17	18	19	20
43	21	22	23	24	25	26	27
44	28	29	30	31			

ईश्वर सम्बन्धी अद्वैत विचारों का भी खण्डन करने का प्रयास नहीं किया है, जैसा कि शंकर ने ब्रह्म को एकमात्र सत्य मानकर सम्पूर्ण जगत को मिथ्या माना है वैसी बात गाँधीजी के साथ नहीं है। यदि हम गाँधी जी के जीवन का अवलोकन करें तो यह पता चलता है कि उन्होंने वस्तुतः सभी ईश्वरवादी सिद्धान्तों को माना है क्योंकि उनका मत है कि आध्यात्मिकता की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को ईश्वर के समक्ष समर्पण करना नितान्त आवश्यक है। शंकर का कहना है कि जीव ब्रह्म में विलीन हो जाता है पर गाँधी ईश्वर और सत्य में द्वैत मानता है। इसके साथ वे यह भी मानते हैं कि सत्य की प्राप्ति के लिए ईश्वर की कृपा आवश्यक है। इसलिए उन्होंने धर्म के लिए ईश्वर की उपासना को आवश्यक माना है। इस संदर्भ में यह कह देना आवश्यक है कि शंकराचार्य ने यह माना है कि जब जीव ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करती है तो वह ब्रह्म में विलिन हो जाती है। उसका व्यक्तित्व अस्तित्व ब्रह्म में उसीप्रकार लुप्त हो जाता है जिसप्रकार वर्षा की बूंदें समुद्रतल को छूते ही समुद्र में विलिन हो जाती है। लेकिन गाँधी जी के अनुसार जब ईश्वर की कृपा हमारे ऊपर होती है तब आत्मा और ईश्वर के बीच द्वैत बनी रहती है क्योंकि आत्मा एक अंश है और ईश्वर एक सम्पूर्णता। इसलिए अंश सम्पूर्णता के बराबर नहीं हो सकता।

रामानुज के विचारों से गाँधीजी ज्यादा प्रभावित थे। गाँधीजी के ईश्वर विचार को समझने में अधिकांशतः इसलिए गलती होने की सम्भावना रहती है

शब्दों का प्रयोग किया है कि इन्होंने कुछ ऐसी दार्शनिक शब्दों का प्रयोग किया है जिसका दार्शनिक अर्थ लुप्त होता हुआ साधारण अर्थों में प्रयुक्त होने लगा है।

गाँधीजी ने अपने कथन में द्वैतवाद, अद्वैतवाद आदि दार्शनिक शब्दों का प्रयोग किया है लेकिन वस्तुतः इन्होंने इन शब्दों का दार्शनिक अर्थ नहीं जाना था केवल विचार के साथ इन शब्दों का प्रयोग किया है। इन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है। गाँधीजी के अनुसार ईश्वर हमारे दिल का इतना निकट है जितना कि नाखून उंगलियों के मांस के पास। इनके अनुसार ईश्वर अत्यन्त कठोर भी है। वह हमारे अनेक गलतियों को क्षमा कर सकता है लेकिन के अर्थ में हमारी सहायता कर सकते हैं अगर हम उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करें तो हमें उसके लिए दण्ड भी दे सकता है। गाँधीजी का यह ईश्वर विचार बताता है कि ईश्वर विश्वव्यापी और विश्वातीत दोनों है।

गाँधीजी के अनुसार ईश्वरीय स्वरूप की समुचित व्याख्या हम किसी भी शब्द के माध्यम से उतनी स्पष्ट नहीं कर सकते जितना कि 'सत्य' शब्द के माध्यम से। ईश्वर, न्यायिता, शासक, संहारक, सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञाता तो है ही लेकिन इन सबों के ऊपर ईश्वर सत्य है। हिन्दू धर्म तथा अन्य धर्मों में ईश्वर को अनन्त नामों से सम्बोधित किया गया। लेकिन कोई भी सम्बोधन ईश्वर के वास्तविक स्वरूप की व्याख्या करने में सक्षम नहीं है जितना कि सत्य शब्द से सम्भव है। अतः गाँधी जी के अनुसार सत्य शब्द पूर्ण रूप से ईश्वरीय स्वरूप की व्याख्या करने में

सक्षम है। अर्थात् "God is truth."

लेकिन महात्मा गाँधी जी अपने इस विचार में कुछ परिवर्तन लाते हैं। इनके अनुसार जीवन का सर्वोच्च सिद्धान्त सत्य है। इन्होंने Young India के एक संदर्भ में कहा है कि जो लोग यह कहते हैं कि ईश्वर प्रेम है मैं उनके साथ यह कहने को तैयार हूँ, लेकिन आगे चलकर अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि सत्य ही ईश्वर है।

गाँधी जी ने ईश्वर सत्य है, से। सत्य ही ईश्वर है, पर आने के लिए इन्होंने तर्कशास्त्र के नियमों की विशेष परवाह नहीं की। मात्र अनुभव और सहज मनोवैज्ञानिक विकास के द्वारा ही वे ईश्वर सत्य है से सत्य ही ईश्वर है पर पहुँच गये थे। यह ठीक है कि साधारणतया किसी पूर्णव्यापी भावात्मक तार्किक वाक्य का सरल आवर्तन दोषपूर्ण होता है और इसलिए सभी मनुष्य मरणशील है से मरणशील मनुष्य है निष्कर्ष नहीं निकाल सकते हैं। किन्तु इस नियम के भी अपवाद हैं। जब किसी वाक्य के उद्देश्य एवं विधेय वास्तवाचकता में समान होते हैं तो सरल आवर्तन सभी विवेकशील जीव मनुष्य हैं बिल्कुल निर्दोष होगा। इसी प्रकार 'ईश्वर सत्य है' से 'सत्य ईश्वर है' का सरल आवर्तन दोषपूर्ण नहीं होगा क्योंकि सत्य और ईश्वर दोनों समान हैं।

लेकिन यहाँ एक प्रश्न उठकर हमारे सामने आता है कि किस कारणों से महात्मा गाँधी जी ने God is truth को परिवर्तन कर Truth is God कहा व इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि सर्वप्रथम महात्मा गाँधी जी के अनुसार विश्व में अनेकों

NOVEMBER 2013							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
44					1	2	3
45	4	5	6	7	8	9	10
46	11	12	13	14	15	16	17
47	18	19	20	21	22	23	24
48	25	26	27	28	29	30	

DECEMBER 2013							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
48							1
49	2	3	4	5	6	7	8
50	9	10	11	12	13	14	15
51	16	17	18	19	20	21	22
52	23	24	25	26	27	28	29
1	30	31					

ऐसे व्यक्ति हैं जो ईश्वरीय सत्ता को नहीं मानते लेकिन फिर भी वे सत्य की सत्ता को मानते हैं। अनीश्वरवादी के ईश्वर में अविश्वास के कारण ही गांधीजी ने सत्य को ईश्वर माना। हम जानते हैं कि Atheist सत्य की खोज में ईश्वरीय अस्तित्व को भी अस्वीकार देते हैं जहाँ तर्क संशयवादी का सवाल है वे भी इस बात में विश्वास करते हैं कि सत्य विश्व का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त है। महात्मा गांधी जी के अनुसार ऐसे Atheist या संशयवादी जो सत्य को मानते हैं परन्तु ईश्वरीय सत्ता का बहिष्कार करते हैं, वे सही अर्थों में Atheist नहीं कहे जा सकते।

इस सम्बन्ध में दूसरी बात है कि गांधीजी के अनुसार वैसे लोग आग्रह मानते समझते रहे हैं कि उनका ईश्वर अन्य धर्मों के अनुयायियों के ईश्वर से महान और शक्तिशाली है। ऐसे ही धार्मिक लोग दूसरे धर्म के अनुयायियों को अधार्मिक और नास्तिक कहते हैं लेकिन सही अर्थों में धर्म के ये हठवादी अनुयायी वास्तविक रूप से धार्मिक नहीं माने जाते। गांधीजी ने धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में निहित इन्हीं आपसी मतभेदों से बचने के लिए ईश्वर का नाम ईश्वर से बदलकर सत्य रखा है जो हर धार्मिक व्यक्ति के लिए मान्य है। गांधीजी के अनुसार जबकि विभिन्न धर्मों के लोग ईश्वर के नाम पर एक दूसरे के विरोधी हैं सत्य के नाम पर उनके जो मतभेद हैं समाप्त हो सकती है। यही कारण है कि गांधी का ईश्वर कई विरोधी धर्मों का समन्वय है।

इस सम्बन्ध में तीसरी बात यह यही कही जा सकती है कि तर्क सबको छोड़ सकता है मगर सत्य को नहीं। सत्य

हम सबको सत्य से अधिक आकर्षित करता है। मानवता की आशा ईश्वर सम्बन्धी अंधविश्वास से बढ़कर मानवता की भावना, बुद्धि एवं तर्क पर निर्भर करती है क्योंकि अंधविश्वास के कारण संसार में न जाने कितने अनर्थ हुए हैं, इसलिए गाँधी जी ने ईश्वर से अधिक महत्व सत्य को दिया है। फिर तर्क ईश्वर को छोड़ सकता है पर सत्य को नहीं। इसके साथ-साथ गाँधीजी सत्य को उपासना का विषय मानते हैं। जो उनके लिए सदैव रहा है।

एक दार्शनिक समीक्षक और दार्शनिक सिद्धान्त में पारंगत व्यक्ति गाँधी के इस विचार पर आक्षेप कर सकते हैं कि सत्य और ईश्वर दोनों में सत्य किसी वस्तु का विशेषण माना जा सकता है। सत्य का सर्वमान्य अर्थ विचार और वस्तु के बीच तथा ज्ञान और ज्ञेय के बीच एक द्वैत होता है। दर्शन ईश्वर और सत्य में द्वैत मानता है, लेकिन गाँधी ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता में भिन्नता नहीं मानते हैं, ऐसी स्थिति में एक सत्य और ईश्वर के बीच किस आधार पर समन्वय सम्भव है, लेकिन गाँधीजी उन ऋषियों और महात्माओं में हैं जो ज्ञान और ज्ञेय के बीच किसी भी प्रकार के द्वैत को नहीं मानते हैं। क्योंकि उन्होंने ज्ञान और ज्ञेय के बीच एक आवश्यक सम्बन्ध को माना है। स्वयं उपनिषद ने भी ब्रह्म की व्याख्या 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के रूप में किया है। श्रुति से भी स्पष्ट है कि ब्रह्म को सत्य का दूसरा रूप माना गया है। अतः गाँधीजी का यह विचार कि 'सत्य ही ईश्वर है' उचित संगत प्रतीत होता है।

महात्मा गाँधी का यह विचार

कि सत्य ही ईश्वर है। औपनिषदिक रूप से इस बात का संकेत देता है कि सत्य ही वह विधान है जिसकी हर धार्मिक व्यक्ति को उपासना करनी चाहिए। चाहे वह हिन्दू, ईसाई तथा इस्लाम धर्म का हो। स्वयं गांधीजी ने अपने जीवन में सत्य की ही उपासना की है। उनकी दृष्टि में जो व्यक्ति सच्चे हृदय से सत्य का पालन करता है केवल वही सही अर्थों में धार्मिक होने का दावा कर सकता है। Muirhead महोदय भी बाइबिल का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि तुम सत्य को जानलोगे और सत्य तुम्हें मुक्ति प्रदान करेगा।" टालस्टाय ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Kingdom of God is within you में इसी बात का उल्लेख करते हैं। भगवान ईसा भी कहते हैं मैं ही मोक्ष मार्ग हूँ सत्य हूँ और सम्पूर्ण जीवन हूँ।

गांधीजी के अनुसार सत्य ही सच्चिदानन्द है। सत्य ही एकमात्र ऐसा शब्द है जो ईश्वर की वास्तविक स्वरूप की व्याख्या करता है। इसलिए यदि सत्य की उपासना की जाए तो सही अर्थों में ईश्वर की उपासना कही जाएगी। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि गांधी की इस सत्यनिष्ठा ने उनकी प्रारम्भिक सत्यनिष्ठा को किसी तरह घटाया है, बल्कि सब तरह से बढ़ाया ही है। इसतरह गांधीजी की यह ईश्वर धारणा में कि सत्य ही ईश्वर है। निरीश्वरवादियों को भी सम्पूर्ण स्थान मिल जाता है।

Gandhiji ने God is truth कहा क्योंकि इसके अस्तित्व में उन्होंने पूर्णतः विश्वास किया है। कुछ प्रमाणों के

आधार पर गाँधीजी ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित किया है—

1. प्रत्येक मनुष्य में नैतिक भावना है जबकि नैतिकता मनुष्य का स्वभाव नहीं है, अतः नैतिकता ईश्वरीय देन है।

2. प्रत्येक मनुष्य चेतन प्राणी है। जबकि स्थूल शरीर को चेतन गुण नहीं है। यह चेतना प्रदान करनेवाला अवश्य कोई परमसत्ता है। यह ईश्वर है।

3. श्रुति - श्रुति ग्रन्थों में ईश्वर की व्याख्या की गयी है। साथ ही इन ग्रन्थों के रचयिता के रूप में ईश्वर को ही माना जाता है।

4. फिर इस विश्व की सृष्टिकर्ता - पालनकर्ता तथा संहारक के रूप में अवश्य ही कोई सत्ता है क्योंकि प्रत्येक कार्य का कुछ कारण होता है। यही कारण ईश्वर है।

इसप्रकार गाँधी जी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं तथा कहते हैं कि ईश्वर सत्य है। भले ही इसका कोई तार्किक प्रमाण नहीं दिया जा सकता है, यह विश्वास का विषय है।

अतः गाँधी जी के अनुसार (Truth is God) सत्य ही ईश्वर है और (God is truth) ईश्वर ही सत्य है।